फफूँदी को कृषि उत्पादन में वृद्धि हेतु प्रयोग के लिये पेटेंट मिला

पंतनगर। 9 फरवरी, 2010। पंतनगर विष्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा ऐसी फफूँदी की पहचान कर ली गई है जिससे पौधों की अच्छी बढ़ोत्तरी के साथ–साथ कम उपजाऊ जमीन में भी अच्छी पैदावार ली जा सकती है। उन्होंने इसकी शीघ्र वृद्धि कर इसे जैविक खाद्य के रूप में प्रयोग करने के तरीके को भी ढूंढ निकाला है। इस कार्य के लिये भारत सरकार का पेटेंट भी प्राप्त कर लिया गया है। यह पेटेंट विष्वविद्यालय के आधारभूत विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जीव विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डा. अनिल कुमार शर्मा और डा. रष्मि श्रीवास्तव को प्राप्त हुआ है। इस उपलब्धि के लिये उन्हें विष्वविद्यालय के कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट ने बधाई दी है तथा आषा प्रकट की है कि इस विष्व स्तर की खोज से कृषि उत्पादन में आ रहे ठहराव को दूर करने में मदद मिलेगी। निदेषक शोध, डा. एस.के. सैनी तथा अधिष्ठाता विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, डा. बी.आर.के. गुप्ता तथा अन्य अधिकारियों एवं षिक्षकों ने भी इन वैज्ञानिकों को बधाई दी।

हरित क्रांति के दौरान फसलों की अधिक पैदावार वाली नई प्रजातियों के विकास पर वैज्ञानिकों को ध्यान रहा जिनसे अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए रासायनिक उर्वरकों का उपयोग होता रहा। किन्तु अब उतनी ही मात्रा में रासायनिक उर्वरक दिये जाने के उपरांत भी पैदावार में वृद्धि नहीं हो रही है। इसका प्रमुख कारण रसायनों के अधिक प्रयोग से मृदा की उत्पादक क्षमता का दिनों–दिन कम होता जाना है। इसको देखते हुये वैज्ञानिकों द्वारा जैविक खेती पर पुनः बल दिया जा रहा है ताकि जैविक उर्वरकों द्वारा फसलों की अधिक पैदावार प्राप्त करने के साथ–साथ मृदा पर हो रहे रासायनिक उर्वरकों के दुष्प्रभाव को कम कर मृदा संरचना में सुधार किया जा सके। इसी क्रम में वैज्ञानिकों द्वारा कई सूक्ष्म जीवों पर शोध किया गया जो मृदा में उपलब्ध फास्फोरस तथा वातावरण में उपलब्ध नाइट्रोजन का प्रयोग कर फसलों की वृद्धि करने में सहायक होते हैं। वैज्ञानिकों द्वारा इन सूक्ष्म जीवों में से माइक्रोराइजल फफूँदी पर भी शोध किया गया।

पंतनगर के वैज्ञानिकों द्वारा ऐसी फफूँदी की खोज की गई है जो न सिर्फ पौधों की अच्छी वृद्धि करती है बल्कि मृदा में उपलब्ध बड़े व सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा भी पौधे को उपलब्ध कराती है। किन्तु फफूँदी को फसलों पर उर्वरकों के रूप में प्रयोग करना आसान नहीं था। इस जटिल समस्या को देखते हुये डा. शर्मा एवं डा. श्रीवास्तव ने फफूँदी की एक प्रजाति, *फ्यूजेरियम पेलिड्रोसियम,* को खोज निकाला। इस विकल्प को खोजने का प्रयास पिछले पाँच वर्षों से चल रहा था। इस फफूँदी को उत्पादित करना आसान है तथा इसकी तकनीक भी तैयार कर ली गयी है। अब इसको व्यावसायिक स्तर पर उत्पादित करने की तकनीक विकसित करने के लिये विष्वविद्यालय के प्रयास जारी हैं जिससे कि निकट भविष्य में इस फफूँदी को किसानों को उपलब्ध कराया जा सके।

फफूँदी फ्यूजेरियम पेलिड्रोसियम को जैविक खाद्य के रूप में प्रयोग करने का तरीका ढूंढने वाले वैज्ञानिक, डा. अनिल कुमार शर्मा